

## मन के आकारात्मक पहलू या पक्ष ( TOPOGRAPHICAL ASPECTS OF MIND )

मन के आकारात्मक पक्ष का अर्थ मन का वह भाग है, जहाँ गत्यात्मक शक्तियाँ (dynamic forces) अर्थात् इड (id), ईगो (ego) तथा सुपर ईगो (super ego) अवस्थित होते हैं। रेबर (Reber, 1995) ने इसी अर्थ में अकारात्मक पक्ष की परिभाषा दी है। चैपलिन (Chaplin, 1975) ने भी कहा है कि, "आकारात्मक पक्ष से मन के उस क्षेत्र का बोध होता है जहाँ इड, ईगो तथा सुपर ईगो का स्थान होता है।"<sup>1</sup>

### मन के आकारात्मक पक्ष के भाग ( Begments of the Topographical Aspect of Mind )

फ्रायड के अनुसार मन (mind), आत्मन (self) या व्यक्तित्व के आकारात्मक पक्ष या पहलू के निम्नलिखित तीन भाग हैं:—

#### ( क ) चेतन

#### ( Conscious )

चेतन का अर्थ आकारात्मक मन (topographical mind) का वह भाग है, जिसमें ऐसी इच्छाएँ या ऐसे विचार रहते हैं जिनका तात्कालिक बोध (immediate awareness) व्यक्ति को रहती है। इसे परिभाषित करते हुए रेबर एवं रेबर (Reber & Reber, 2001) ने कहा है कि, "मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त में चेतन का तात्पर्य मन के उस पक्ष से है जिसमें वे सब कुछ रहती हैं, जिनकी जानकारी व्यक्ति को क्षणमात्र होती है।"<sup>2</sup>

**उदाहरण**—परीक्षा-भवन में जिस समय परीक्षार्थी किसी प्रश्न का उत्तर लिखता रहता है, उस समय उस उत्तर से सम्बन्धित सारी बातों की जानकारी उसे रहती है। अतः उस समय वे सारी बातें मन के जिस क्षेत्र या भाग में रहती हैं, उसे ही चेतन कहेंगे। स्मरण रखना चाहिए कि चेतन मन (conscious mind) में नैतिक, अनैतिक, सामाजिक, असामाजिक, कामुक (sexual), अकामुक (non-sexual) सभी तरह की इच्छाएँ उत्पन्न हो सकती हैं। चेतन स्तर पर प्रतिबन्धन (censorship) अधिक कठोर होता है। इसलिए, इस स्तर पर अनैतिक तथा कामुक इच्छाओं की संतुष्टि में बड़ी कठिनाई होती है। चेतन मन का आकार सबसे छोटा होता है।

1. "The topographical aspect of mind refers to the region of the mind where are located id, ego and super ego."  
—Chaplin, 1975
2. "In psychoanalytic theory conscious refers to that aspect of mind that encompasses all that one is momentarily aware of."  
—Reber & Reber, 2001



### (ख) अर्धचेतन (Sub-Conscious)

अर्धचेतन को अवचेतन (preconscious), प्राक्चेतन (foreconscious) वर्णात्मक अचेतन (descriptive unconscious) आदि नामों से भी पुकारा जाता है।

रेबर एवं रेबर (2001) के अनुसार, "अर्धचेतन या अवचेतन का अर्थ गत्यात्मक मन (dynamic mind) का वह भाग है, जिसमें ऐसी इच्छाएँ या विचार रहते हैं, जिनकी जानकारी व्यक्ति को तात्कालिक (immediately) नहीं होती है, किन्तु थोड़े प्रयास से यह जानकारी संभव हो जाती है।"<sup>1</sup>

**उदाहरण**—परीक्षा-भवन में परीक्षार्थी जब किसी एक प्रश्न का उत्तर लिखता रहता है, उस समय उसे दूसरे प्रश्नों के उत्तर से सम्बन्धित जानकारी नहीं होती है। लेकिन, पहले प्रश्न के उत्तर का लिखना जब समाप्त हो जाता है तो वह किसी दूसरे प्रश्न के उत्तर को लिखने की तैयारी करता है तो मामूली कोशिश करने पर उस दूसरे प्रश्न के उत्तर से सम्बन्धित बातों की जानकारी हो जाती है। अतः पहले प्रश्न का उत्तर लिखते समय दूसरे प्रश्न के उत्तर से सम्बन्धित बातें मन के जिस क्षेत्र या भाग में अवस्थित थीं, वही अर्धचेतन है। इस स्तर पर भी सभी तरह की इच्छाएँ रहती हैं। इसका आकार चेतन मन से थोड़ा बड़ा होता है।

### (ग) अचेतन (Unconscious)

आकारात्मक मन (topographical mind) के तीसरे तथा अंतिम भाग को अचेतन कहते हैं। इस भाग में ऐसी इच्छाएँ या ऐसे विचार रहते हैं, जिनकी जानकारी व्यक्ति को न तो वर्तमान समय में होती है और न थोड़े प्रयास से ही सम्भव होती है, बल्कि यह जानकारी कुछ विशेष मनोवैज्ञानिक प्रविधियों (psychological techniques), जैसे सम्मोहन (hypnosis), मनोविश्लेषण (Psychoanalysis) आदि से सम्भव होती है।

ब्राउन (Brown, 1960) ने अचेतन मन को अधिक अच्छी तरह परिभाषित किया है। उनके अनुसार, "मन के उस भाग को अचेतन कहते हैं, जिसमें ऐसी अर्जित सामग्रियाँ रहती हैं, जिनका प्रत्यावाह इच्छानुसार नहीं किया जा सकता है, किन्तु वे स्वतः घटित हो सकती हैं और जिन्हें हम सम्मोहन तथा अन्य प्रयोगात्मक कार्य-प्रणालियों द्वारा जानते हैं कि वे हमारे मन में उपस्थित हैं।"<sup>2</sup>

इस परिभाषा के विश्लेषण (analysis) से निम्नलिखित बातें स्पष्ट होती हैं:—

(i) अचेतन वास्तव में मन के आकारात्मक पक्ष (topographical aspect) का एक भाग है।

1. "Preconscious is the domain of mind whose components are not momentarily a part of one's consciousness but which may be retrieved by a simple exercise of memory."  
—Reber & Reber, 2001
2. "Unconscious is that segment of the mind which contains such experienced materials which we cannot recall at will, but which may occur automatically and which we know is present in our mind through hypnosis and other experimental procedures."  
—Brown, 1960



- (ii) अचेतन में ऐसी इच्छायें दमित होती हैं जो अनैतिक, कामुक (sexual) तथा असामाजिक होती हैं। इन्हें अचेतन प्रेरणा (unconscious motivations) या अचेतन संघटक (unconscious contents) कहते हैं।
- (iii) अचेतन की इच्छाएँ पहले चेतन में होती हैं। जब उन इच्छाओं की सन्तुष्टि चेतन स्तर पर सामाजिक एवं नैतिक प्रतिबन्धों (restrictions) के कारण नहीं हो पाती है तो वे अचेतन में दमित (repressed) हो जाती हैं।
- (iv) अचेतन के संघटकों (विचारों एवं इच्छाओं) की अभिव्यक्ति (expression) या सन्तुष्टि अप्रत्यक्ष रूप से (indirectly) होती है। जैसे—दैनिक जीवन की भूलों (errors), स्वप्नों (dreams), आदि रूपों में उनकी अभिव्यक्ति एवं सन्तुष्टि होती है।
- (v) अचेतन के संघटकों की जानकारी सम्मोहन (hypnosis), आदि मनोवैज्ञानिक प्रविधियों (techniques) के माध्यम से होती है।

### अचेतन के अस्तित्व के प्रमाण

#### (Proofs for the Existence of Unconscious)

अचेतन या अचेतन मन (unconscious mind) के अस्तित्व को फ्रायड (Freud) ने अप्रत्यक्ष रूप से (indirectly) प्रमाणित करने का प्रयास किया। उन्होंने निम्नलिखित आधारों (bases) या प्रमाणों (proofs) के आलोक में सिद्ध किया है कि चेतन मन (conscious mind) की तरह अचेतन मन का भी अस्तित्व (existence) है और यह भी हमारे व्यवहारों का महत्वपूर्ण निर्धारक (determinant) है:—

1. सम्मोहन (Hypnosis)—फ्रायड (Freud) ने सम्मोहन के आधार पर अचेतन के अस्तित्व को प्रमाणित किया। सम्मोहन एक ऐसी मनोवैज्ञानिक प्रविधि (psychological technique) है, जिसके द्वारा रोगी या व्यक्ति में निद्रा जैसी स्थिति (sleep like state) उत्पन्न कर दी जाती है, जिससे वह बाह्य जगत (external world) के प्रति अचेत बन जाता है। किन्तु, अपने सम्मोहक (hypnotizer) के प्रति जागरूक तथा प्रतिक्रियाशील (responsive) रहता है। प्रायः देखा जाता है कि सम्मोहित अवस्था में रोगी ऐसे व्यवहारों तथा विचारों को व्यक्त करता है जो उसमें इस अवस्था के न तो पहले देखे गये और न बाद में देखे जाते हैं। इससे संकेत मिलता है कि व्यक्ति के मन का एक ऐसा भाग अवश्य है, जिस पर व्यक्ति का नियन्त्रण (control) नहीं रहता है और न उसके संघटकों (contents) की तात्कालिक जानकारी व्यक्ति को रहती है। प्रश्न है कि सम्मोहित अवस्था में व्यक्ति के विचार एक विशेष ढंग के क्यों हो जाते हैं? वैसे विचार इस अवस्था के पहले क्यों नहीं देखे गये? इस अवस्था के समाप्त होने के बाद उन विचारों की चेतना या स्मृति व्यक्ति को क्यों नहीं होती? इन प्रश्नों का समाधान चेतन मन के आधार पर सम्भव नहीं है। लेकिन, जब हम अचेतन मन के अस्तित्व को मान लेते हैं तो इन प्रश्नों का उत्तर देना या समाधान करना सम्भव हो जाता है। अतः इस तर्कआधार (rationale) से अचेतन का अस्तित्व प्रमाणित होता है।

2. सम्मोहन के बाद की अवस्था (Post hypnotic stage)—सम्मोहित अवस्था (hypnotized state) में रोगी या व्यक्ति को जब कोई आदेश सम्मोहक द्वारा दिया जाता है तो वह सम्मोहन की अवस्था समाप्त हो जाने के बाद उस आदेश का पालन करता है। लेकिन इस बात की व्याख्या नहीं कर पाता है कि उसने ऐसा क्यों किया। इससे प्रमाणित





होता है कि मन का एक भाग ऐसा अवश्य है जिसका प्रभाव व्यक्ति के व्यवहार पर पड़ता है, किन्तु उसकी चेतना उसे नहीं होती है। मन का वही भाग अचेतन कहलाता है।

**उदाहरण**—एक रोगी को एक कुशल मनश्चिकित्सक (psychiatrist) ने सम्मोहित कर दिया और उसे आदेश दिया कि इस अवस्था के समाप्त होने के 40 मिनट के बाद तुम्हें पाँच ग्लास पानी पीना है। देखा गया कि सम्मोहित अवस्था की समाप्ति के ठीक 40 मिनट बाद उसने तेज घ्यास का अनुभव किया और पाँच ग्लास पानी पिया। छठ्ठा ग्लास पानी देने पर उसने पीने से इनकार कर दिया। रोगी इस बात की व्याख्या नहीं कर सका कि उसने पाँच ही ग्लास पानी क्यों पिया और वह भी चालीस मिनट बाद ही। प्रश्न है कि रोगी ने ठीक 40 मिनट बाद ही पानी क्यों माँगा? उसने ठीक पाँच ही ग्लास पानी क्यों पिया? वह अपने इन अनोखे व्यवहारों की व्याख्या क्यों नहीं कर सका? इन प्रश्नों का उत्तर चेतन मन के आधार पर सम्भव नहीं है। लेकिन, जब अचेतन के अस्तित्व को मान लिया जाता है तो इन प्रश्नों का उत्तर देना सरल बन जाता है। अतः इस तर्कआधार पर भी अचेतन का अस्तित्व प्रमाणित होता है।

**3. स्वप्न (Dreams)**—अचेतन का एक मुख्य प्रमाण (chief proof) स्वप्न है। हम सभी स्वप्न देखते हैं। कभी सुखद स्वप्न (pleasant dreams), कभी चिन्ता स्वप्न (anxiety dream), कभी भय स्वप्न (terror dream) और कभी दण्ड स्वप्न (punishment dream) देखे जाते हैं। लेकिन, प्रश्न यह है कि हम स्वप्न क्यों देखते हैं? हम क्यों विभिन्न तरह के स्वप्नों को देखते हैं। इन प्रश्नों या समस्याओं का समाधान चेतन मन के आधार पर सम्भव नहीं है। लेकिन, जब हम अचेतन मन के अस्तित्व को स्वीकार कर लेते हैं तो इन प्रश्नों का समाधान आसानी से हो जाता है। फ्रायड (Freud) के अनुसार अचेतन में दमित इच्छाओं की सन्तुष्टि के लिए हम स्वप्न देखते हैं। नींद की हालत में प्रतिबन्धक (censorship) कमजोर हो जाता है। इसीलिए, अचेतन की अनैतिक तथा कामुक की अभिव्यक्ति एवं सन्तुष्टि स्वप्नों के माध्यम से होने लगती है। अतः यह तर्कआधार (rationale) भी अचेतन का एक सबल प्रमाण (strong proof) है।

**4. दैनिक जीवन की भूलें (Errors of every day life)**—दैनिक जीवन में होने वाली भूलें भी अचेतन के अस्तित्व को प्रमाणित करती हैं। हम सभी अपने दैनिक जीवन में तरह-तरह की भूलें करते हैं। इनमें बोलने की भूल (slip of tongue), लिखने की भूल (slip of pen), वस्तुओं को बेजगह रखने की भूल (misplacing objects), पहचानने की भूल (misrecognition), छापने की भूल (misprinting) आदि मुख्य हैं। यदि विज्ञान का कारण-प्रभाव सिद्धान्त (cause-effect theory) सत्य है तो इन भूलों का भी कोई कारण होना चाहिए, कोई सार्थकता होनी चाहिए और कोई लाभ (utility) होना चाहिए। चेतन स्तर पर इस समस्या का समाधान सम्भव नहीं है कि हम भूलें क्यों करते हैं। लेकिन, जब हम अचेतन के अस्तित्व को मान लेते हैं तो इसकी व्याख्या सम्भव हो जाती है। फ्रायड (Freud) के अनुसार, कामुक तथा असामाजिक इच्छाओं की सन्तुष्टि होती है, क्योंकि भूलों में सफाई पेश करने (excuse) की सम्भावना रहती है। अतः इस आधार पर भी अचेतन का अस्तित्व प्रमाणित होता है।

**5. दुर्घटनाएँ (Accidents)**—दुर्घटनाओं के विश्लेषण (analysis) से भी अचेतन के अस्तित्व का प्रमाण मिलता है। यह एक वास्तविकता है कि प्रत्येक व्यक्ति से छोटी या



बड़ी दुर्घटना या दुर्घटनाएँ होती हैं। लेकिन, वह अपने द्वारा होने वाली दुर्घटना या दुर्घटनाओं के कारण की जानकारी उसे नहीं होती है। ऐसा क्यों? इसका उत्तर चेतन मन के आधार पर सम्भव नहीं है। लेकिन, अचेतन मन के आधार पर यह सम्भव हो जाता है। फ्रायड (Freud) के अनुसार अचेतन में दमित अनैतिक इच्छाओं की सन्तुष्टि हेतु व्यक्ति दुर्घटना करता है।

**उदाहरण**—एक प्रसिद्ध एवं कुशल सर्जन से अपने एकलौते बेटे (the only son) के पेट का ऑपरेशन (operation) करते समय एक ऐसी भूल हो गयी जिससे उसकी मृत्यु हो गयी। यह दुर्घटना क्यों हुई? इसका समाधान वह चिकित्सक चेतन रूप से नहीं कर सकता। मनोविश्लेषण करने पर पता चला कि उसके अचेतन मन में अपने बेटे की मृत्यु की इच्छा तथा उस बेटे की जवान आकर्षक पत्नी के साथ लैंगिक इच्छा दमित थी, जिसकी सन्तुष्टि इस दुर्घटना के माध्यम से हुई। अतः इस आधार पर भी अचेतन का अस्तित्व (existence) प्रमाणित होता है।

**6. स्वतन्त्र साहचर्य वार्तालाप (Free association talk)**—कभी-कभी स्वतन्त्र साहचर्य वार्तालाप के आधार-अचेतन का प्रमाण मिलता है। प्रायः देखा जाता है कि जब रोगी अपने चिकित्सक के साथ निःसंकोच होकर बातचीत करता है तो कुछ ऐसी बातों या अनुभूतियों को व्यक्त कर देता है, जिनकी व्याख्या वह चेतन रूप से नहीं कर पाता है और आश्चर्यचकित रह जाता है। लेकिन, अचेतन के अस्तित्व को मान लेने पर इन सारी बातों तथा अनुभूतियों की व्याख्या दमित इच्छाओं के आलोक में सम्भव तथा सरल बन जाती है। अतः यह तर्कआधार (rationale) भी अचेतन का एक ठोस प्रमाण है।

**7. घबराहट (Nervousness)**—घबराहट की स्थिति में कभी-कभी व्यक्ति के मुँह से ऐसी बात निकल जाती है अथवा वह कुछ ऐसा व्यवहार कर बैठता है, जिस पर उसे खुद ही आश्चर्य होता है। प्रश्न है कि घबराहट की हालत में व्यक्ति ऐसी बातें क्यों बोलता है? वह ऐसा आश्चर्यजनक व्यवहार क्यों करता है? वह इन सबकी व्याख्या क्यों नहीं कर पाता है? वह बाद में फिर ऐसा व्यवहार क्यों नहीं दुहराता है? इन प्रश्नों का उत्तर चेतन के आधार पर सम्भव नहीं है। लेकिन, जब अचेतन के अस्तित्व को मान लिया जाता है तो इसका उत्तर सम्भव हो जाता है। अतः इस तार्किक आधार पर भी अचेतन का अस्तित्व प्रमाणित होता है।

**8. नामों का अचानक प्रत्यावह (Sudden recollection of names)**—कभी-कभी लाख कोशिश करने पर भी किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान का नाम याद नहीं आता है। लेकिन प्रयास करना छोड़ देने के बाद अचानक वह नाम याद आ जाता है। जैसे—परीक्षा भवन में किसी प्रश्न का उत्तर लिखते समय कभी-कभी किसी वैज्ञानिक या मनावैज्ञानिक का नाम याद नहीं आता है। कोशिश करने पर भी याद नहीं आता है। जब परीक्षा-भवन से ज्यों ही बाहर आते हैं, वह नाम याद आ जाता है। ऐसा क्यों? इसका उत्तर चेतन मन के आधार पर सम्भव नहीं है। फ्रायड (Freud) के अनुसार अचेतन में दमित इच्छा इसका आधार होता है। अतः यह तर्कआधार (rationale) भी अचेतन के अस्तित्व के पक्ष में है।

**9. उद्बोधन (Awakening)**—उद्बोधन का अर्थ है जग जाना। कभी-कभी व्यक्ति इस निर्णय (decision) के साथ सो जाता है कि रात के दो बजे जग जाना है और तीन



बजे ट्रेन पकड़ना है। देखा जाता है कि ठीक दो बजे उसकी नींद स्वतः टूट जाती है। ऐसा क्यों? क्यों उसकी नींद समय पर टूट जाती है। नींद की हालत में चेतन तो निष्क्रिय बना रहता है तो उसे जगाता कौन है? इन सब का उत्तर केवल अचेतन के आधार पर ही सम्भव है। फ्रायड (Freud) के अनुसार, निद्रा की हालत में अचेतन सक्रिय बना रहता है और व्यक्ति को समय पर जगा देता है। अतः इस तर्कआधार पर भी अचेतन के अस्तित्व का प्रमाण मिलता है।

**10. समस्या का स्वतः समाधान (Automatic solution of the problem)**—कभी-कभी व्यक्ति की समस्या का समाधान स्वतः मिल जाता है। लाख प्रयास करने पर भी समस्या का समाधान नहीं मिल पाता है तो व्यक्ति समाधान करना छोड़ देता है और किसी दूसरे कार्य में लग जाता है। इसी बीच उसे अपनी समस्या का समाधान खुद ही मिल जाता है। फ्रायड (Freud) के अनुसार, चेतन रूप से समस्या के समाधान से अलग हो जाने पर अचेतन सक्रिय बन जाता है, जिससे उसका समाधान मिल जाता है। अतः इस आधार पर भी अप्रत्यक्ष रूप से अचेतन का अस्तित्व प्रमाणित होता है।

**11. नशा (Intoxication)**—नशा की हालत में होने वाले व्यवहारों से भी अचेतन के अस्तित्व का प्रमाण मिलता है। प्रायः देखा जाता है कि नशा की स्थिति में व्यक्ति ऐसे गंदे तथा अनैतिक विचारों तथा व्यवहारों की अभिव्यक्ति करता है, जिनकी अभिव्यक्ति सामान्य स्थिति में नहीं करता है। ऐसा क्यों? इसका उत्तर वह व्यक्ति चेतन रूप से देने में सफल नहीं होता है। लेकिन, अचेतन के आधार पर इसका उत्तर देना सरल बन जाता है। फ्रायड (Freud) के अनुसार, नशा की हालत में व्यक्ति का अचेतन मन सक्रिय हो उठता है और चेतन मन निष्क्रिय हो जाता है। इसलिए, उसके विचार तथा व्यवहार नशा की हालत में बदल जाते हैं और व्यक्ति को उनकी जानकारी नहीं हो पाती है। इस आधार पर भी अचेतन का अस्तित्व प्रमाणित होता है।

**12. मानसिक रोग (Mental diseases)**—मानसिक रोगों के आलोक में भी अचेतन के अस्तित्व को प्रमाणित करना सम्भव होता है। मानसिक रोग के दो प्रकार हैं—(क) स्नायु विकृति (neurosis) तथा (ख) मनोविकृति (psychosis)। स्नायुविकृति के कई प्रकार हैं जैसे—चिन्ता स्नायुविकृति (anxiety neurosis), बाध्यता (obsession-compulsion), उन्माद (hysteria), मनोवैज्ञानिक भय (phobia) आदि। DSM III (1980), DSM III-R (1984) तथा DSM IV (1994) में स्नायुविकृति के स्थान पर चिन्ता-विकृति (anxiety disorder) शब्द का व्यवहार किया गया है। मनोविकृति में मनोविदलता (schizophrenia), स्थिर व्यामोह (paranoia) तथा उत्साह विषाद (MDP) की गणना की जाती है। व्यक्ति में ये मानसिक रोग क्यों विकसित हो जाते हैं? व्यक्ति में ये मानसिक रोग क्यों विकसित हो जाते हैं? इनके क्या कारण हैं? इन समस्याओं का समाधान चेतन मन के आधार पर सम्भव नहीं है। लेकिन, अचेतन के अस्तित्व को मान लेने पर इन प्रश्नों का समाधान सम्भव हो जाता है। फ्रायड (Freud) के अनुसार, अचेतन इच्छाएँ जब अधिक कामुक तथा अनैतिक होती हैं तो उनकी अभिव्यक्ति एवं सन्तुष्टि मानसिक रोगों के माध्यम से होती है ताकि प्रतिबन्धक (censorship) का भय न रहे। अतः इस तर्कआधार पर भी अचेतन का अस्तित्व प्रमाणित होता है।

**13. मानसिक रोगी के उपचार (Treatment of mental patients)**—मानसिक रोगियों के सफल उपचार से भी अचेतन के अस्तित्व का प्रमाण मिलता है। जब केवल





चेतन को मानकर मानसिक रोगियों का उपचार किया जाता है तो इससे उनका उपचार सफल नहीं होता है। लेकिन, जब अचेतन के अस्तित्व (existence) की मानकर मानसिक रोगियों का उपचार किया जाता है तो उनका उपचार सफल होता है। इससे सहज ही अचेतन का अस्तित्व प्रमाणित हो जाता है। वास्तव में यह तर्कआधार (rationale) अचेतन मन के अस्तित्व का एक सबल प्रमाण है।

अतः उपर्युक्त तर्कआधार (rationales) अचेतन के अस्तित्व (existence) के सबल प्रमाण (strong proofs) हैं।

### अचेतन का स्वरूप या विशेषताएँ (Nature or Characteristics of Unconscious)

अचेतन के स्वरूप या विशेषताओं के सम्बन्ध में फ्रायड (Freud), युंग (Jung) तथा एडलर (Adler) के अलग-अलग दृष्टिकोण (view-points) हैं। उनके दृष्टिकोणों के बीच समानता (similarity) कम और भिन्नताएँ (differences) अधिक हैं। अतः चेतन से सम्बन्धित उनके दृष्टिकोणों का उल्लेख हम अलग-अलग करेंगे।

(क) फ्रायड का दृष्टिकोण या सिद्धान्त (Freud's Viewpoint or Theory)—  
अचेतन के सम्प्रत्यय (concept) की चर्चा फ्रायड (Freud) के पूर्व अफलातून, अरस्तु (Aristotle) आदि यूनानी विद्वानों के साहित्य में मिलती है। इसी तरह इसकी चर्चा डेकार्ट (Descartes), लीबनिज (Liebnitz) आदि के दर्शन में भी मिलती है। लेकिन, अचेतन की व्याख्या व्यावहारिक दृष्टिकोण से सर्वप्रथम फ्रायड ने की और इसके अस्तित्व (existence) तथा महत्त्व (importance) को प्रमाणित किया। अतः यहाँ हम फ्रायड (Freud) के दृष्टिकोण के अनुसार अचेतन की विशेषताओं का वर्णन करेंगे, जो निम्नलिखित हैं:—

1. अचेतन मन का बड़ा भाग है (Unconscious is the major segment of mind)—फ्रायड (Freud) के अनुसार आकारात्मक मन (topographical mind) के तीन भाग हैं—चेतन, अर्धचेतन तथा अचेतन। इन में अचेतन का क्षेत्र सबसे बड़ा है। उनके अनुसार आकारात्मक मन का  $\frac{7}{8}$  भाग अचेतन है। और केवल  $\frac{1}{8}$  चेतन तथा अर्धचेतन है। जिस तरह हिमशैल (iceberg) का अधिक भाग पानी में छिपा रहता है, उसी तरह मन का अधिक हिस्सा अचेतन होता है। इससे प्रमाणित होता है कि व्यक्ति की चेतन इच्छाओं या प्रेरणाओं की तुलना में अचेतन इच्छाएँ या प्रेरणाएँ कई गुना अधिक होती हैं।

2. अचेतन व्यक्तिगत होता है (Unconscious is personal)—फ्रायड के अनुसार अचेतन की एक मुख्य विशेषता यह है कि यह व्यक्तिगत होता है। इसका अर्थ यह है कि अचेतन में जो इच्छाएँ एवं विचार होते हैं, उनका सम्बन्ध व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन से होता है। उसके अचेतन में वही सारी इच्छायें या विचार होते हैं, जो पहले उसके चेतन मन में थे। फ्रायड (Freud) का यह दृष्टिकोण युंग (Jung) के दृष्टिकोण से भिन्न है, क्योंकि युंग के अनुसार अचेतन व्यक्तिगत तथा जातीय (racial) दोनों होता है।

3. अचेतन दमन पर आधारित होता है (Unconscious is based on repression)—  
फ्रायड के अनुसार अचेतन के लिए दमन (repression) आवश्यक है, जिसके द्वारा चेतन की अनैतिक तथा कामुक इच्छाएँ सामाजिक तथा नैतिक प्रतिबन्धों (restrictions)





इच्छाओं पर नियन्त्रण नहीं होता है। वह अचेतन इच्छाओं या विचारों से अवगत नहीं होता है। इसलिए, वह न तो अचेतन इच्छाओं की सन्तुष्टि में प्रत्यक्ष रूप से सहायक हो सकता है और न ही बाधक हो सकता है।

**9. अचेतन मानव व्यवहार का एक मुख्य निर्धारक है (Unconscious is an important determinant of human behaviour)**—जिस तरह चेतन मन व्यक्ति के व्यवहारों को निर्धारित करता है, उसी तरह अचेतन मन भी उसके व्यवहारों को निर्धारित करता है। अन्तर केवल इतना है कि चेतन मन से निर्धारित होने वाले व्यवहारों की जानकारी व्यक्ति को रहती है, किन्तु अचेतन मन से निर्धारित होने वाले व्यवहारों की जानकारी उसे नहीं रहती है। इसकी जानकारी के लिए कुछ विशेष मनोवैज्ञानिक प्रविधियों की आवश्यकता होती है।

**10. अचेतन का अस्तित्व अनुमानित है (Unconscious has its inferential existence)**—अचेतन की एक विशेषता यह है कि इसके अस्तित्व को प्रत्यक्ष प्रमाणों के आधार पर सिद्ध नहीं किया जा सकता है। इसके अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए अनुमानित प्रमाणों का सहारा लेना पड़ता है। अचेतन के अस्तित्व को प्रमाणित करने हेतु दैनिक जीवन की भूल, स्वप्न, मानसिक विकृति आदि का उपयोग किया जाता है। लेकिन ये सभी प्रमाण किसी निरीक्षण (observation), या प्रयोग (experiments) पर आधारित नहीं हैं, केवल अनुमान (inference) पर आधारित हैं।

उपर्युक्त विवेचनों (discussions) से अचेतन के सम्बन्ध में फ्रायडवादी दृष्टिकोण, उपागम (approach) या सिद्धान्त (theory) स्पष्ट हो जाता है।

**(ख) युंग का दृष्टिकोण या सिद्धान्त (Jung's Viewpoint or Theory)**

अचेतन के स्वरूप (nature) के सम्बन्ध में युंग (Jung) का अपना दृष्टिकोण, उपागम या सिद्धान्त है। अतः उनके दृष्टिकोण के आलोक में अचेतन की विशेषताओं का उल्लेख हम यहाँ करना चाहेंगे:—

**1. जातीय अचेतन या सामूहिक अचेतन (Racial unconscious or collective unconscious)**—जातीय अचेतन या सामूहिक अचेतन के सम्प्रत्यय (concept) का उल्लेख युंग (Jung) ने अचेतन से सम्बन्धित अपने सिद्धान्त में किया। उन्होंने दो प्रकार के अचेतन का उल्लेख किया—(क) सामूहिक अचेतन (Collective unconscious) तथा (ख) व्यक्तिगत अचेतन (Personal unconscious)।

(क) सामूहिक अचेतन (Collective unconscious) सामूहिक अचेतन का अर्थ अचेतन का वह भाग है, जिसमें मानव जाति की हजारों साल की प्रवृत्तियाँ (tendencies), स्मृतियाँ (memories) तथा अनुभूतियाँ (experiences) आदि संस्कार (archetypes) के रूप में जमा रहती हैं। संस्कार वंशागत (inherited) होते हैं और पीढ़ी दर पीढ़ी होते हुए व्यक्ति तक पहुँचते हैं। रैथस तथा नेविड (Rathus and Nevid, 1991) ने सामूहिक अचेतन की परिभाषा देते हुए कहा है कि, "कार्ल युंग के सिद्धान्त में सामूहिक अचेतन का तात्पर्य संस्कारों तथा जातीय स्मृतियों के परिकल्पित भण्डार से है।"<sup>1</sup>





इस परिभाषा के विश्लेषण से सामूहिक अचेतन या जातीय अचेतन के स्वरूप (nature) के सम्बन्ध में कई विशेषताएँ स्पष्ट होती हैं—(i) युंग (Jung) के अनुसार, सामूहिक अचेतन का आकार व्यक्तिगत अचेतन (personal unconscious) से काफी बड़ा होता है। (ii) इस अचेतन में आदिम प्रतिबिम्ब (primitive images) अथवा संस्कार (archetypes) संघटक (contents) के रूप में होते हैं। (iii) ये संस्कार वंशागत (inherited) या प्रजातीय (racial) होते हैं। इसी आधार पर सामूहिक अचेतन को जातीय अचेतन भी कहा जाता है। (iv) इस अचेतन के संस्कार अर्थात् प्रवृत्तियाँ, स्मृतियाँ या अनुभूतियाँ कई पीढ़ियों (generations) से होते हुए व्यक्ति तक पहुँचती हैं। (v) इस अचेतन के संस्कार से मानव जाति के इतिहास (अस्पष्ट, रहस्यमय, पौराणिक चित्रों) को प्रतिबिम्बित करता है। (vi) संस्कार (archetypes) के अचेतन होने पर भी इनका निश्चित प्रभाव हमारे विचारों, स्वप्नों तथा सम्वेगों पर पड़ता है। (vii) इस अचेतन का अस्तित्व (existence) दमन (repression) पर आधारित नहीं होता है। कारण, इसकी सामग्रियाँ या संघटक (contents) व्यक्ति द्वारा अर्जित नहीं होते हैं, बल्कि वंशागत होते हैं।

(ख) व्यक्तिगत अचेतन (Personal Unconsciousness)—युंग (Jung) के अनुसार अचेतन का दूसरा भाग व्यक्तिगत अचेतन (personal unconscious) कहलाता है। व्यक्तिगत अचेतन का अर्थ वह अचेतन है, जिसमें व्यक्ति के अपने व्यक्तिगत जीवन की कुण्ठित इच्छाएँ (frustrated desires) दमित रहती हैं। जब व्यक्ति के चेतन मन में कोई अनैतिक (immoral), असामाजिक (anti-social) या कामुक (sexual) इच्छा उत्पन्न होती है तो उसकी सन्तुष्टि में सामाजिक तथा नैतिक प्रतिबन्धक (censorship) बाधक होता है, जिसके कारण व्यक्ति चिन्ता, संघर्ष, दोष भाव आदि से पीड़ित हो जाता है और उसका मानसिक संतुलन बिगड़ने लगता है। व्यक्ति का ईगो (ego) उस इच्छा को अचेतन में दमित कर देता है, जिससे चेतन रूप से उस चिन्ता, संघर्ष तथा दोष भाव का समाधान हो जाता है। इसी प्रकार अनैतिक तथा कामुक इच्छाओं का दमन अचेतन में होता रहता है। अतः व्यक्ति की ऐसी ही व्यक्तिगत इच्छाओं से व्यक्तिगत अचेतन का निर्माण होता है। युंग (Jung) का यह अचेतन वास्तव में फ्रायड (Freud) के सम्पूर्ण अचेतन के समान है। अन्तर केवल इतना है कि युंग का व्यक्तिगत अचेतन सतही होता है और इसमें सुपर ईगो (super ego) की इच्छाएँ भी दमित होती हैं।

2. अचेतन इच्छाएँ भौतिक तथा अनैतिक दोनों होती हैं (Unconscious desires are both moral and immoral)—युंग (Jung) के अनुसार अचेतन में दोनों तरह की इच्छाएँ होती हैं—कामुक-अकामुक, नैतिक-अनैतिक, सामाजिक-असामाजिक। उनके अनुसार इड (id) की अनैतिक इच्छाओं के साथ-साथ सुपर ईगो (super ego) की नैतिक इच्छायें भी व्यक्तिगत अचेतन में दमित रहती हैं। कारण, व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत कमजोरियों या सीमाओं (limitations) के कारण अपनी कुछ नैतिक इच्छाओं की सन्तुष्टि नहीं कर पाता है जो व्यक्तिगत अचेतन में दमित हो जाती हैं। इसके अतिरिक्त जातीय अचेतन (racial unconscious) की बहुत सारी प्रवृत्तियाँ अकामुक (non-sexual) होती हैं।

3. अचेतन के लिए दमन अनिवार्य नहीं है (Repression is not essential for

unconscious) युंग (Jung) के अनुसार दमन केवल व्यक्तिगत अचेतन (Personal unconscious) के लिए आवश्यक है। लेकिन, जातीय अचेतन (racial unconscious)



या सामूहिक अचेतन (collective unconscious) के लिए यह आवश्यक नहीं है। कारण, इस अचेतन के संघटक (contents) अर्थात् संस्कार (archetypes) वास्तव में वंशागत होते हैं।

4. अचेतन इच्छाएँ सक्रिय होती हैं (Unconscious desires are active) — युंग (Jung) के सिद्धान्त के अनुसार व्यक्तिगत अचेतन के साथ-साथ जातीय अचेतन की इच्छाएँ भी अपनी सन्तुष्टि के लिए सक्रिय तथा प्रयत्नशील रहती हैं।

5. अचेतन इच्छाएँ साथ-साथ चलती हैं (Unconscious desires go together) — युंग (Jung) के अनुसार अचेतन की एक विशेषता यह है कि इसकी इच्छाएँ एक-दूसरे के साथ विरोध नहीं करती हैं, बल्कि साथ-साथ रहती हैं और अपनी-अपनी सन्तुष्टि का प्रयास करती हैं।

6. अचेतन मन व्यक्ति के नियन्त्रण से बाहर होता है (Unconscious mind is beyond control) — अचेतन की एक विशेष स्वचालित होना है। इस पर व्यक्ति का नियन्त्रण चेतन रूप से सम्भव नहीं होता है। यह बात व्यक्तिगत अचेतन तथा जातीय अचेतन दोनों पर लागू होती है।

7. अचेतन परिकल्पित होता है (Unconscious is hypothetical) — अचेतन का अस्तित्व (existence) वास्तव में परिकल्पित होता है। इसे न देखा जा सकता है, न स्पर्श किया जा सकता है, इसे केवल अनुमान (inference) के आधार पर प्रमाणित किया जा सकता है। यह बात व्यक्तिगत अचेतन के साथ-साथ सामूहिक अचेतन पर भी लागू होती है।

8. अचेतन हमारे व्यवहार को प्रभावित करता है (Unconscious influences our behaviour) — अचेतन मन का प्रभाव बहुत अंशों में हमारे व्यवहारों पर पड़ता है। स्वप्नों (dreams), दैनिक जीवन की भूलों (errors of our every day life) तथा मानसिक विकृतियों (mental disorders) के रूप में वस्तुतः व्यक्तिगत अचेतन की इच्छाओं तथा जातीय अचेतन के संस्कारों (archetypes) की अभिव्यक्ति होती है। दूसरे शब्दों में, अचेतन संघटकों (unconscious contents) का प्रभाव स्वप्न, दैनिक जीवन की भूल, मानसिक विकृति आदि रूपों में पड़ता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि अचेतन से सम्बन्धित युंग (Jung) के विचार कई बिन्दुओं पर फ्रायड (Freud) के विचार से भिन्न और कई अन्य बिन्दुओं पर अभिन्न हैं।

### अचेतन के विषय में फ्रायड तथा युंग के दृष्टिकोणों के बीच तुलना

#### (Comparison between Freud's view and Jung's view Regarding Unconscious)

फ्रायड (Freud) तथा युंग (Jung) के अचेतन से सम्बन्धित विचारों (view-points), उपागमों (approaches) या सिद्धान्तों (theories) का वर्णन अलग-अलग हम कर चुके हैं। अब हमें यह देखना है कि इन दोनों मनोवैज्ञानिकों के विचारों या सिद्धान्तों में अचेतन के विषय में क्या समानताएँ (similarities) हैं और क्या भिन्नताएँ





### (क) समानताएँ (Similarities)

अचेतन के विषय में फ्रायड (Freud) तथा युंग (Jung) के विचारों या सिद्धान्तों के बीच निम्नलिखित समानताएँ हैं:-

- (1) अचेतन के बारे में फ्रायड (Freud) तथा युंग (Jung) के बीच एक समानता यह है कि दोनों इस विचार से सहमत हैं कि मन (mind) का एक भाग अचेतन है। जिस प्रकार चेतन मन का अपना अस्तित्व (existence) है, उसी प्रकार अचेतन मन का अपना अस्तित्व है।
- (2) फ्रायड (Freud) तथा युंग (Jung) दोनों इस विचार से सहमत हैं कि चेतन मन की अपेक्षा अचेतन मन का आकार (size) कहीं अधिक बड़ा है।
- (3) फ्रायड तथा युंग दोनों में इस बात को लेकर सहमति है कि अचेतन इच्छाएँ या संघटक सक्रिय (active) होते हैं तथा अपनी अभिव्यक्ति के लिए प्रयत्नशील रहते हैं।
- (4) इन दोनों मनोवैज्ञानिकों के बीच इस बात को लेकर सहमति है कि अचेतन इच्छाएँ विभिन्न स्वरूप के होते हुए भी एक-दूसरे की सन्तुष्टि में बाधक नहीं होती हैं।
- (5) ये दोनों मनोवैज्ञानिक इस बात को मानते हैं कि स्वप्नों, दैनिक जीवन की भूलों तथा मानसिक विकृतियों (mental disorders) के रूप में अचेतन का प्रभाव मानव व्यवहार पर पड़ता है।

### (ख) भिन्नताएँ या असमानताएँ (Differences or Dissimilarities)

अचेतन के स्वरूप (nature) के सम्बन्ध में फ्रायड के दृष्टिकोण (view-point) तथा युंग के दृष्टिकोण (view-point) के बीच कई मौलिक भेद हैं। अतः हम उन भेदों या भिन्नताओं (differences) का उल्लेख यहाँ करना चाहेंगे।

(1) फ्रायड (Freud) के अनुसार सम्पूर्ण अचेतन व्यक्तिगत (personal) होता है। सम्पूर्ण अचेतन का सम्बन्ध व्यक्ति के अपने जीवन में घटित घटनाओं से होता है। व्यक्ति के अचेतन में केवल ऐसी इच्छाएँ होती हैं, जो कभी उसके चेतन मन में उत्पन्न हुई थी और सन्तुष्टि न होने के कारण दमित हो गयी थी। दूसरी ओर युंग (Jung) के अनुसार अचेतन के दो प्रकार हैं—(क) व्यक्तिगत अचेतन (personal unconscious) तथा (ख) जातीय अचेतन (racial unconscious)। व्यक्तिगत अचेतन में व्यक्ति की व्यक्तिगत इच्छाएँ दमित रहती हैं, जिनकी सन्तुष्टि चेतन स्तर पर नहीं हो पाती है। इसके विपरीत जातीय अचेतन या सामूहिक अचेतन (collective unconscious) में ऐसी प्रवृत्तियाँ, स्मृतियाँ, अनुभूतियाँ (experiences) अर्थात् संस्कार (archetypes) रहते हैं जिनका सीधा सम्बन्ध व्यक्ति के पूर्वजों (ancestors) से होता है।

(2) फ्रायड (Freud) ने अचेतन के लिए दमन (repression) को आवश्यक माना। उन्होंने कहा कि दमन के बिना अचेतन का अस्तित्व सम्भव नहीं है। कारण, अचेतन इच्छाएँ दमन के द्वारा ही चेतन से निकल कर अचेतन तक पहुँचती हैं। अतः यदि चेतन में ऐसी इच्छाएँ का दमन ही न हो तो अचेतन में इच्छा या इच्छाओं के होने का प्रश्न ही नहीं उठता। दूसरी ओर युंग (Jung) ने अचेतन के लिए दमन को आवश्यक नहीं माना। उनके अनुसार व्यक्तिगत अचेतन (personal unconscious) के लिए दमन



### (क) समानताएँ (Similarities)

अचेतन के विषय में फ्रायड (Freud) तथा युंग (Jung) के विचारों या सिद्धान्तों के बीच निम्नलिखित समानताएँ हैं:-

- (1) अचेतन के बारे में फ्रायड (Freud) तथा युंग (Jung) के बीच एक समानता यह है कि दोनों इस विचार से सहमत हैं कि मन (mind) का एक भाग अचेतन है। जिस प्रकार चेतन मन का अपना अस्तित्व (existence) है, उसी प्रकार अचेतन मन का अपना अस्तित्व है।
- (2) फ्रायड (Freud) तथा युंग (Jung) दोनों इस विचार से सहमत हैं कि चेतन मन की अपेक्षा अचेतन मन का आकार (size) कहीं अधिक बड़ा है।
- (3) फ्रायड तथा युंग दोनों में इस बात को लेकर सहमति है कि अचेतन इच्छाएँ या संघटक सक्रिय (active) होते हैं तथा अपनी अभिव्यक्ति के लिए प्रयत्नशील रहते हैं।
- (4) इन दोनों मनोवैज्ञानिकों के बीच इस बात को लेकर सहमति है कि अचेतन इच्छाएँ विभिन्न स्वरूप के होते हुए भी एक-दूसरे की सन्तुष्टि में बाधक नहीं होती हैं।
- (5) ये दोनों मनोवैज्ञानिक इस बात को मानते हैं कि स्वप्नों, दैनिक जीवन की भूलों तथा मानसिक विकृतियों (mental disorders) के रूप में अचेतन का प्रभाव मानव व्यवहार पर पड़ता है।

### (ख) भिन्नताएँ या असमानताएँ (Differences or Dissimilarities)

अचेतन के स्वरूप (nature) के सम्बन्ध में फ्रायड के दृष्टिकोण (view-point) तथा युंग के दृष्टिकोण (view-point) के बीच कई मौलिक भेद हैं। अतः हम उन भेदों या भिन्नताओं (differences) का उल्लेख यहाँ करना चाहेंगे।

(1) फ्रायड (Freud) के अनुसार सम्पूर्ण अचेतन व्यक्तिगत (personal) होता है। सम्पूर्ण अचेतन का सम्बन्ध व्यक्ति के अपने जीवन में घटित घटनाओं से होता है। व्यक्ति के अचेतन में केवल ऐसी इच्छाएँ होती हैं, जो कभी उसके चेतन मन में उत्पन्न हुई थी और सन्तुष्टि न होने के कारण दमित हो गयी थी। दूसरी ओर युंग (Jung) के अनुसार अचेतन के दो प्रकार हैं—(क) व्यक्तिगत अचेतन (personal unconscious) तथा (ख) जातीय अचेतन (racial unconscious)। व्यक्तिगत अचेतन में व्यक्ति की व्यक्तिगत इच्छाएँ दमित रहती हैं, जिनकी सन्तुष्टि चेतन स्तर पर नहीं हो पाती है। इसके विपरीत जातीय अचेतन या सामूहिक अचेतन (collective unconscious) में ऐसी प्रवृत्तियाँ, स्मृतियाँ, अनुभूतियाँ (experiences) अर्थात् संस्कार (archetypes) रहते हैं जिनका सीधा सम्बन्ध व्यक्ति के पूर्वजों (ancestors) से होता है।

(2) फ्रायड (Freud) ने अचेतन के लिए दमन (repression) को आवश्यक माना। उन्होंने कहा कि दमन के बिना अचेतन का अस्तित्व सम्भव नहीं है। कारण, अचेतन इच्छाएँ दमन के द्वारा ही चेतन से निकल कर अचेतन तक पहुँचती हैं। अतः यदि चेतन में इच्छाओं का दमन ही न हो तो अचेतन में इच्छा या इच्छाओं के होने का प्रश्न ही नहीं उठता। दूसरी ओर युंग (Jung) ने अचेतन के लिए दमन को आवश्यक नहीं माना। उनके अनुसार व्यक्तिगत अचेतन (personal unconscious) के लिए दमन





सन्तुष्टि आवश्यक है। लेकिन, जातीय अचेतन (racial unconscious) अथवा सामूहिक अचेतन (collective unconscious) के लिए दमन की कोई आवश्यकता नहीं है। इस अचेतन के संघटक (contents) या संस्कार (archetypes) बिना दमन के ही पूर्वजों से पीढ़ी-दर-पीढ़ी होते हुए व्यक्ति तक पहुँच जाते हैं।

(3) फ्रायड (Freud) के अनुसार अचेतन के संघटक (contents) अर्जित (acquired) होते हैं। कारण, अचेतन में केवल ऐसी इच्छाएँ दमित रहती हैं, जिन्हें व्यक्ति चेतन रूप से अर्जित करता है। दूसरी ओर युंग (Jung) के अनुसार केवल व्यक्तिगत अचेतन के संघटक अर्जित होते हैं लेकिन, जातीय अचेतन या सामूहिक अचेतन के संघटक वंशागत (inherited) होते हैं, अर्जित नहीं।

(4) फ्रायडवादी सिद्धान्त (Freudian theory) के अनुसार अचेतन में केवल इड (id) की इच्छाएँ या प्रवृत्तियाँ दमित होती हैं। सुपर ईगो (super ego) की इच्छाओं के नैतिक होने के कारण उनकी सन्तुष्टि में चेतन स्तर पर कोई बाधा या प्रतिबन्ध (censorship) नहीं होता है। इसलिए, उनका दमन अचेतन मन में नहीं होता है। लेकिन, इड (id) की इच्छाओं के अनैतिक तथा कामुक होने के कारण चेतन स्तर पर उनकी सन्तुष्टि में अनेक बाधाएँ होती हैं, जिससे अचेतन में उनका दमन हो जाता है। दूसरी ओर युंगीयन सिद्धान्त (Jungian theory) के अनुसार इड (id) के साथ-साथ सुपर ईगो (super ego) की इच्छाएँ भी अचेतन में रहती हैं। कारण, कभी-कभी व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत सीमाओं (limitations) के कारण नैतिक इच्छाओं की सन्तुष्टि भी चेतन स्तर पर नहीं कर पाता है और वह अचेतन में दमित हो जाती है।

(5) फ्रायड (Freud) के दृष्टिकोण से अचेतन इच्छाएँ अनैतिक और प्रधानतः कामुक (sexual) होती हैं। कारण, अचेतन का सम्बन्ध इड (id) से है और इड (id) की इच्छाएँ अनैतिक होती हैं। दूसरी बात यह है कि सामाजिक तथा नैतिक प्रतिबन्ध (restriction or censorship) सबसे अधिक कामुक इच्छाओं की सन्तुष्टि पर होता है। इसलिए, इन्हीं इच्छाओं का दमन अधिकतम होता है। दूसरी ओर, युंग के दृष्टिकोण से अचेतन इच्छाएँ नैतिक-अनैतिक, कामुक-अकामुक दोनों होती हैं। कारण, अचेतन का सम्बन्ध इड की अनैतिक इच्छा के साथ-साथ सुपर ईगो की नैतिक इच्छा से भी होता है। दूसरी बात यह है कि जातीय अचेतन या सामूहिक अचेतन में संस्कार के रूप में अकामुक इच्छाएँ (non-sexual desires) भी होती हैं।

(6) फ्रायड (Freud) तथा युंग (Jung) के सिद्धान्तों के बीच एक अन्तर यह भी है कि युंग का व्यक्तिगत अचेतन फ्रायड के अचेतन के बिल्कुल समान नहीं है। कारण यह है कि फ्रायड के अचेतन में केवल इड की अनैतिक इच्छाएँ दमित होती हैं जबकि युंग के व्यक्तिगत अचेतन में इड की अनैतिक इच्छाओं के साथ-साथ सुपर ईगो की नैतिक इच्छाएँ भी दमित होती हैं।

(7) फ्रायड के सिद्धान्त के अनुसार अचेतन मन वास्तव में सृजनात्मक नहीं होता है। लेकिन, युंग के सिद्धान्त में अचेतन मन को सर्जनात्मक भी माना गया है। किरकर (Kisker, 1985) के शब्दों में, "युंग का अचेतन सामाजिक, नैतिक तथा सर्जनात्मक है।"



(४) फ्रायड (Freud) के अनुसार अचेतन का सम्बन्ध केवल अतीत से होता है। दूसरे शब्दों में अतीत में, उत्पन्न ऐसी इच्छाएँ जिनकी सन्तुष्टि चेतन स्तर पर नहीं हो सकी वे दमित होकर अचेतन के संघटक (contents) बन गयीं। लेकिन, युंग (Jung) के अनुसार अचेतन का सम्बन्ध अतीत (past) के साथ-साथ वर्तमान (present) तथा भविष्य (future) से भी है (McDougall, 1966)।

(५) फ्रायड (Freud) के अनुसार व्यक्ति के व्यवहार पर केवल व्यक्तिगत अचेतन का प्रभाव पड़ता है। स्वप्न, दैनिक जीवन की भूल या मानसिक विकृति के विकास में केवल व्यक्तिगत अचेतन का हाथ होता है। लेकिन युंग (Jung) के अनुसार व्यक्ति के व्यवहार पर व्यक्तिगत अचेतन के साथ-साथ जातीय अचेतन का भी प्रभाव पड़ता है। जैसे—व्यक्ति कभी-कभी भूल से बंभा क्यों हो जाता है? वह अपने आप को स्वप्न में घोड़ों की तरह सवारी का काम करते, चिड़ियाँ की तरह उड़ते या कुत्ते की तरह भूँकते क्यों देखता है? इस समस्या का समाधान केवल जातीय अचेतन के संस्कार (archetypes) के आधार पर ही सम्भव हो पाता है।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि अचेतन से सम्बन्धित फ्रायड (Freud) तथा युंग (Jung) के विचारों या सिद्धान्तों में उपर्युक्त कई मौलिक अन्तर हैं। इन अन्तरों की समीक्षा से युंग के दृष्टिकोण (view-point) या सिद्धान्त (theory) अधिक समग्र (comprehensive) तथा तर्कसंगत (rational) प्रतीत होता है। मैकडूगल (McDougall, 1966) ने फ्रायड तथा युंग के सिद्धान्तों का तुलनात्मक अध्ययन किया। निष्कर्ष के रूप में कहा कि दैनिक जीवन की विभिन्न भूलों (mistakes), स्वप्नों (dreams), दुर्घटनाओं (accidents) तथा मानसिक विकृतियों की समुचित व्याख्या जितना युंग के अचेतन के आधार पर सम्भव है, उतना फ्रायड के अचेतन के आधार पर नहीं।

## अचेतन का महत्त्व

### ( Importance of Unconscious )

मानव स्वभाव (human nature) काफी जटिल होता है। उस जटिल स्वभाव की अधिव्यक्ति व्यवहारों के रूप में होती है। अतः व्यवहारों का जटिल होना स्वाभाविक है। अतः व्यवहारों के समुचित विश्लेषण (analysis) तथा व्याख्या (interpretation) के आधार पर मानव के जटिल स्वरूप को समझने में अचेतन का महत्त्वपूर्ण योगदान है। इस सन्दर्भ में अचेतन मन के योगदान या महत्त्व को निम्नलिखित रूपों में देखा जा सकता है:—

1. मानसिक विकृतियों को समझने के लिए (For understanding mental disorders)—अचेतन का महत्त्व मानसिक विकृतियों के सन्दर्भ में देखा जा सकता है। असामान्य मनोविज्ञान का इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब तक अचेतन मन की खोज फ्रायड द्वारा नहीं की गयी तब तक मानसिक रोगों (mental diseases) की समुचित व्याख्या सम्भव नहीं हो सकी। अचेतन मन के स्वरूप तथा इसके अस्तित्व (existence) की जानकारी मिलने के पहले तक हम मानसिक रोगों या विकृतियों की व्याख्या भूत-पिचाश के आधार पर करते रहे और वास्तविकता से दूर अंधकार में भटकते





रहे। लेकिन, जब मनोविश्लेषकों (psychoanalysts) ने अचेतन की खोज कर ली तो मानसिक विकृतियों जैसे उन्माद (hysteria), बाध्यता (obsession compulsion), स्थिर व्यामोह (paranoia) आदि की सही व्याख्या अचेतन प्रेरकों (unconscious motivations) के आधार पर सम्भव हो सकी और हम अन्धकार से उजाले में आ सके।

**2. मनोचिकित्सा के लिए (For Psychotherapy)**—अचेतन की जानकारी से न केवल हमें मानसिक विकृतियों या मानसिक रोगियों के अचेतन कारणों को समझने में मदद मिली बल्कि उनके उपचार में भी सफलता मिली। अचेतन की खोज के पूर्व हम मानसिक रोगियों को भूत-पिशाच का परिणाम समझ कर झाड़-फूंक, मारपीट आदि अमानवीय विधियों द्वारा उनके उपचार का असफल प्रयास करते रहे। लेकिन, अचेतन की जानकारी हो जाने के बाद सम्मोहन, मनोविश्लेषण (Psycho-analysis) आदि मनोचिकित्सा द्वारा उनका सफल उपचार सम्भव हो सका। मानव जीवन के लिए अचेतन का यह एक महत्त्वपूर्ण योगदान है।

**3. स्वप्नों की व्याख्या के लिए (For interpreting dreams)**—अचेतन का महत्त्व स्वप्नों की व्याख्या के सन्दर्भ में उल्लेखनीय है। अचेतन की खोज के पूर्व स्वप्नों की वैज्ञानिक व्याख्या सम्भव नहीं हो सकी। लेकिन, जब अचेतन की जानकारी हो गयी तो हम समझने लगे कि स्वप्न आकारण नहीं होता है, बल्कि अचेतन में दमित इच्छाओं के कारण होता है। इस प्रकार भिन्न-भिन्न प्रकार के स्वप्नों की वैज्ञानिक व्याख्या बहुत हद तक सम्भव हो गयी।

**4. भूलों की व्याख्या के लिए (For interpreting errors)**—अचेतन से दैनिक जीवन की भूलों की व्याख्या करने में मदद मिलती है। बोलने की भूल (slip of tongue), लिखने की भूल (slip of pen), छापने की भूल (misprinting) आदि अनेक भूलें दैनिक जीवन में होती रहती हैं। अचेतन की जानकारी होने के पूर्व हम इन्हें अकारण (accidental) समझते रहे। लेकिन, अचेतन मन की सही जानकारी हो जाने के बाद हमारा अन्धकार दूर हुआ और इन भूलों की सही व्याख्या अचेतन प्रेरणाओं के आधार पर कर सके कि भूलें कारणवश, सार्थक तथा लाभप्रद होती हैं।

**5. अप्रायिक व्यवहारों की व्याख्या के लिए (For interpreting unusual behaviours)**—अचेतन का महत्त्व इस बात से भी प्रमाणित होता है कि इसके आधार पर अप्रायिक व्यवहारों की व्याख्या करना सम्भव होता है। कभी-कभी व्यक्ति आचरिक व्यवहार (customary behaviour) से हट कर कोई व्यवहार करता है, जिसकी व्याख्या चेतन के आधार पर सम्भव नहीं है। जैसे—नशा की हालत, अधिक क्रोध की हालत या भीड़ की हालत में व्यक्ति का प्रथागत व्यवहार प्रायः बदलता है। मंदिर का पुजारी तथा मस्जिद का मुल्ला भी साम्प्रदायिक दंगा (communal riots) के समय हिंसक तथा दानव बन जाते हैं। ऐसा क्यों? अचेतन के अस्तित्व को स्वीकार करने पर इसका समाधान सम्भव हो जाता है, अन्यथा नहीं।

**6. संघटक विश्लेषण के लिए (For content analysis)**—अचेतन का महत्त्व

घटक विश्लेषण के लेख, कविता या जानकारी मिलती है को मानते हुए संघ सफलता मिलती है इस प्रकार महत्त्वपूर्ण स्थान है



घटक विश्लेषण के सन्दर्भ में भी देखा जा सकता है। लेखक, कवि या साहित्यकार के लेख, कविता या साहित्य के संघटकों ( contents ) के विश्लेषण से उसके व्यक्तित्व की जानकारी मिलती है। इसे प्रविधि का संघटक विश्लेषण कहते हैं। जब अचेतन के अस्तित्व को मानते हुए संघटक विश्लेषण किया जाता है तो इससे व्यक्तित्व को समझने में अधिक सफलता मिलती है।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि हमारे जीवन के विभिन्न पक्षों में अचेतन का महत्वपूर्ण स्थान है।

